इकाई - III Date :- 19.05.2020

Topic :- भाषा अर्जित करना और भाषा सीखने में अंतर

Ans → क्या आप बता सकते हैं कि आप जो भाषा बोलते हैं, वह आपने सीखी थी या 'आ गई' थी। इस सवाल का जवाब देना वस्तुतः इतना कठिन नहीं है। जो भाषाएँ आपके परिवेश में रही होंगी, उन्हें तो आपने ग्रहण या अर्जित किया होगा और जो भाषाएँ आपके परिवेश का हिस्सा नहीं रही होंगी, उन्हें आपने सीखा होगा। वास्तव में भाषा अर्जित करना और भाषा सीखना हमारे भाषा-परिवेश पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए यदि आप छपरा क्षेत्र में रहते हैं और वहीं जन्मे, पले-बढ़े और आपको भोजपुरी भाषा का समृद्ध परिवेश मिलता है तो आपने भोजपुरी भाषा अर्जित की होगी। जब आपने विद्यालय में दाखिला लिया होगा और आपने भोजपुरी भाषा के साथ-साथ हिन्दी और अंग्रेजी भाषा पढ़ी तो वह भाषा सीखने अथवा भाषा अधिगम का उदाहरण है। हाँ, हिन्दी और अंग्रेजी के सीखने में थोड़ा बहुत अंतर तो रहा होगा। इसका प्रमुख कारण है - भाषा परिवेश। हिन्दी तो बाजार, सिनेमा, आस-पड़ोस में सुनाई भी दे जाती होगी लेकिन अंग्रेजी का परिवेश मिलना थोड़ा कठिन रहा होगा। अंग्रेजी के थोड़े बहुत शब्द और वाक्य सुनने को मिल जाते होंगे लेकिन उतने नहीं जितने आप हिन्दी के सुनते होंगे।

दरअसल हम अपनी परिवेशीय भाषा में इतने रच बस जाते हैं कि कब भाषा हमारे रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा बन जाती है - पता ही नहीं चलता। बिहार भाषा की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध राज्य है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली-समझी जाती हैं - भोजपुरी, अंगिका, बज्जिका, मैथिली, मगही, उर्दू, हिन्दी, संथाली के अतिरिक्त सीमित रूप से बांग्ला आदि। बिहार का प्रत्येक बच्चा कम से कम दो-तीन भाषाओं पर तो अधिकार रखता ही होगा, क्योंकि उसके आस-पास अनेक भाषाओं का व्यवहार रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा है।

7 वर्ष की पंजाबी भाषी रूपमाला जब दिल्ली से सीतामढ़ी आई तो वह एक नहीं बल्कि तीन भाषाओं का प्रयोग करती थी। उसके घर में (दिल्ली में) पंजाबी बोली जाती थी और स्कूल में हिन्दी और अंग्रेजी भाषा का परिवेश था। वह दिल्ली में जिस परिवेश में रहती थी, वहाँ आस-पास के बच्चे, लोग ज्यादातर अंग्रेजी में बात-चीत करते थे इसलिए रूपमाला को अंग्रेजी सीखने में कोई मुश्किल नहीं हुई।

P.T.O

Scanned with CamScanner